कक्षा : सातवीं – जैन धर्म कोविद (परीक्षा 23 जुलाई, 2023)
उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **15x1 = (15)**

(a) ''विप्पमुक्काण'' का अर्थ है-
(क) अनाचीर्ण (ख) बाह्य एवं आभ्यंतर परिग्रह से मुक्त
(ग) रात्रि भोजन (घ) शरीर पर उबटन (ख)

(b) मर्दन करना (मालिश करना) अनाचार है-
(क) सन्निही (ख) किमिच्छए
(ग) संवाहणा (घ) संपुच्छणा (ग)

(c) चालीसवाँ अनाचीर्ण है-
(क) रोमालोणे (ख) काला लोणे
(ग) सोवच्चले (घ) सिंधवे (घ)

(d) तत्तानिव्वुड भोइत्तं कौन सा अनाचीर्ण हैं-
(क) 30वाँ (ख) 29वाँ
(ग) 31वाँ (घ) 28वाँ (क)

(e) निर्ग्रन्थ दु:ख मुक्ति के लिए किस में अपनी शक्ति लगाते हैं -
(क) त्याग में (ख) तप में
(ग) अहिंसा पालन में (घ) आत्म साधना में (घ)

(f) देवकी महारानी के यहाँ से सिंह केसरी मोदक लाने वाले मुनिराज किस तीर्थंकर के समय के हैं-
(क) 20वें (ख) 21वें
(ग) 22वें (घ) 23वें (ग)

(g) दशाश्रुत स्कंध में निदान करने के कितने रूप बतलाये हैं-
(क) 08 (ख) 11
(ग) 10 (घ) 09 (घ)

(h) नव तत्वों में ग्रहण करने योग्य कितने हैं-
(क) 04 (ख) 03
(ग) 02 (घ) 01 (क)

(i) पृथ्वीकाय का वर्ण है
(क) लाल (ख) पीला
(ग) काला (घ) हरा (ख)

(j) निम्न जीवों में से तेइन्द्रिय का भेद हैं-
(क) अलसिया (ख) चूरणिया
(ग) धनेरिया (घ) कृमि (ग)

(k) असंज्ञी, मिथ्यादृष्टि, अन्तर्मुहूर्त्त की आयुष्य वाले तथा अपर्याप्त मनुष्य हैं-
(क)कर्म भूमि मनुष्य (ख) अकर्म भूमि मनुष्य
(ग) युगलिक मनुष्य (घ) सम्मूर्च्छिम मनुष्य (घ)

(l) अंतिम लोकान्तिक देव है-
(क) अरिष्ट (ख) आदित्य
(ग) अव्याबाध (घ) वरुण (क)

(m) पुण्य तत्व की नामकर्म के उदय से होने वाली प्रकृतियाँ हैं-
(क) 42 (ख) 37
(ग) 82 (घ) 18 (ख)

(n) संवर के उत्कृष्ट भेद हैं-
(क) 42 (ख) 22
(ग) 57 (घ) 20 (ग)

(o) '' लोक भावना '' किसने भाई-
(क) नमिराज ऋषि ने (ख) समुद्रपाल ने
(ग) धर्मरूचि ने (घ) शिवराज ऋषि ने (घ)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1=(15)**

(a) रुग्णावस्था में निर्ग्रन्थ मिश्र जल का उपयोग कर सकते हैं। (नहीं)

(b) अवशेष कर्मों को क्षय करने के लिए मुनि देवलोक से आकर मनुष्य भव धारण करते हैं। (हाँ)

(c) क्षुधा पिपासा को सहन करने वाले निर्ग्रन्थ अजितेन्द्रिय होते हैं। (नहीं)

(d) कृष्ण को गजसुकुमाल मुनि पर राग होने से सोमिल पर द्वेष आया। (हाँ)

(e) प्रतिमा पालन का विस्तृत वर्णन दशाश्रुत स्कन्ध की आठवीं दशा में है। (नहीं)

(f) दिट्ठिया राग-द्वेष पूर्वक वस्तुओं को देखने से लगने वाली क्रिया है। (हाँ)

(g) पन्द्रहवाँ परीषह अलाभ परीषह है। (हाँ)

(h) भिक्षाचरी के तीस भेद होते हैं। (हाँ)

(i) सोलह कवल प्रमाण आहार करना, पाव ऊनोदरी है। (नहीं)

(j) भरे हाथों से दिये जाने वाले आहार को ग्रहण करना संसट्ठचरए कहलाता हैं। (हाँ)

(k) प्रतिसंलीनता तप के पन्द्रह भेद हैं। (नहीं)

(l) प्रायश्चित्त देने वाले का एक गुण प्रकुर्वक है। (हाँ)

(m) अप्रशस्त मन विनय का आठवाँ भेद भेदकारी है। (नहीं)

(n) भक्तामर स्तोत्र की छत्तीसवीं गाथा में दिव्यध्वनि नामक प्रातिहार्य का वर्णन है। (नहीं)

(o) भगवान के चरणों की धूलि से जलोदर रोग भी ठीक हो जाता है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **15x1=(15)**

(a)	निर्ग्रन्थ	(क) ताइणो	अनाचीर्ण
(b)	आसंदी	(ख) श्री कृष्ण	कुर्सी
(c)	तेगिच्छं	(ग) जितेन्द्रिय	चिकित्सा
(d)	मालिश	(घ) षट्काय	गायब्भंग
(e)	परीषह विजय	(च) रस परित्याग	जितेन्द्रिय
(f)	रक्षक	(छ) कुर्सी	ताइणो
(g)	छसु	(ज) चिन्तन	षट्काय
(h)	तीर्थंकर	(झ) असंमोह	श्री कृष्ण
(i)	द्वारिका	(य) गायब्भंग	अग्निकुमार देव
(j)	पराघात	(र) चिकित्सा	नामकर्म
(k)	पाडुच्चिया	(ल) तेरह	क्रिया
(l)	कायक्लेश के भेद	(व) अनाचीर्ण	तेरह
(m)	विरसाहारे	(क्ष) नामकर्म	रस परित्याग
(n)	अणुप्पेहा	(त्र) क्रिया	चिन्तन
(o)	शुक्ल ध्यान	(ज्ञ) अग्निकुमार देव	असंमोह

प्र.4 मुझे पहचानो :- **15x1 = (15)**

(a)	मैं जीव मात्र का रक्षक अन्त में निराबाध सुख की प्राप्ति करता हूँ।	मुनि
(b)	मैं पाँच आश्रवों का त्यागी तथा तीन गुप्तियों से गुप्त हूँ।	निर्ग्रन्थ
(c)	मेरे द्वारा अचित्त नमक ही ग्रहण किया जा सकता है।	जैन साधु
(d)	मैं मर्दन करने, मालिश करने से लगने वाला अनाचीर्ण हूँ।	किमिच्छए
(e)	मैं दाँतुन करने से लगने वाला अनाचीर्ण हूँ।	दंतवणे
(f)	मैं सब दु:खों का नाश करने के लिए संयम में पराक्रम करता हूँ।	महर्षि
(g)	मैं आगामी चौबीसी में बारहवाँ तीर्थंकर बनूँगा।	श्री कृष्ण
(h)	मेरा निर्माण औदारिक पुद्गलों से हुआ है।	द्वारिका नगरी
(i)	मैं ऐसा साधु हूँ जो 6 प्रकार से भिक्षा ग्रहण करता हूँ।	प्रतिमाधारी
(j)	मैंने अशुचि भावना भाई थी।	सनत्कुमार चक्रवर्ती
(k)	मैं भिक्षाचर्या का तेईसवाँ भेद हूँ।	अपुट्ठलाभिए
(l)	मैं काया क्लेश का पाँचवाँ भेद हूँ।	वीरासणिए
(m)	मुझमें शुक्लध्यान का चौथा भेद पाया जाता है।	चौदहवाँ गुणस्थान
(n)	मेरे उत्कृष्ट 42 भेद हैं।	आश्रव तत्व
(o)	मेरे 530 भेद हैं।	रूपी अजीव

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **8x2 = (16)**

(a) भिक्षु प्रतिमा की पाँचवीं प्रतिमा लिखिए।

उ. बोनस अंक दिया जाय।

(b) निदान किसे कहते हैं ? इसका क्या फल होता है ?

उ. जब मोक्ष-मार्ग का साधक अपने जीवनभर की तपस्या का फल '' मुझे अमुक प्रकार की सांसारिक ऋद्धि मिले'' ऐसी चाह-इच्छा करता है तो उसे निदान कहते हैं। अर्थात् '' तप के उपलक्ष्य में भौतिक ऋद्धि प्राप्त करने का संकल्प'' निदान है। दूसरे शब्दों में निदान, लाखों-करोड़ों के मूल्य वाली वस्तु को एक कोड़ी में बेच देना है।

(c) सोमिल पर गजसुकुमाल मुनि को द्वेष नहीं आया, किन्तु कृष्ण को द्वेष आ गया, क्यों ?

उ. गजसुकुमाल मुनि ने शरीरादि का राग छोड़ दिया था, इसलिए उन्हें सोमिल पर द्वेष नहीं आया, किन्तु कृष्ण महाराज का गजसुकुमाल मुनि पर राग था, इसलिए सोमिल पर द्वेष जागृत हो गया।

(d) अनाशानता विनय के भेदों की संख्या लिखते हुए चारित्र विनय के भेद लिखिए।

उ. अनाशातना विनय के 45 भेद हैं और चारित्र विनय के 5 भेद ये हैं- 1. सामायिक चारित्र विनय, 2. छेदोपस्थापनीय चारित्र विनय, 3. परिहार विशुद्धि चारित्र विनय, 4. सूक्ष्मसम्पराय चारित्र विनय, 5. यथाख्यात चारित्र विनय।

(e) निम्न क्रियाओं के अर्थ लिखिए-

उ. (1) वेयारणिया चीर-फाड़ आदि करने से लगने वाली क्रिया।
(2) अणाभोगवत्तिया बिना उपयोग के लापरवाही से लगने वाली क्रिया।

(f) प्रकृति बंध किसे कहते हैं ? कुल कितनी प्रकृतियों का बंध होता है ?

उ. जीव के साथ सम्बन्ध कर्म-पुद्गलों में ज्ञान को आवरण करने, दर्शन को रोकने, सुख-दु:ख देने आदि अलग-अलग स्वभाव का होना प्रकृति बन्ध कहलाता है। कुल 120 प्रकृतियों का बंध होता है।

(g) रिक्त स्थानों की पूर्ति कर श्लोक को पूर्ण कीजिए।

उ. पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र ! धत्त:, पद्मानि तत्र विबुधा: परिकल्पयन्ति।

(h) भिन्नेभ-कुम्भ- गलदुज्ज्वल- शोणितात्त- मुक्ताफलप्रकर- भूषित- भूमिभाग:।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3=(24)

(a) परीसह.....महेसिणो।। गाथा को पूर्ण कर भावार्थ लिखिए।

उ. परीसह- रिऊदंता, धूअमोहा जिइंदिया। सव्व दुक्खप्पहीणट्ठा, पक्कमंति महेसिणो।।
भावार्थ-निर्ग्रंथ क्षुधा-पिपासादि परीषहों को सहन करने वाले, मोह रहित और जितेन्द्रय होते हैं। ऐसे महर्षि दुःख मुक्ति के लिए आत्म-साधना में अपनी शक्ति लगाते हैं।

(b) मूलए.....आमए। गाथा को पूर्ण कर उसका भावार्थ लिखिए।

उ. मूलए सिंगबेरे य, उच्छुखंडे अनिव्वुडे। कंदे मूले य सचित्ते, फले बीए य आमए।।
भावार्थ-जैन मुनि अचित्त वस्तुओं का भोजी होता है, इसलिए वह (मूला) मूली, अदरख, कच्चे इक्षु खण्ड, सचित्त कंद, मूल और कच्चे फल तथा तिल, ज्वार आदि सचित्त बीजों का उपयोग भी नहीं करता, क्योंकि इनके सेवन से जीव-हिंसा की वृद्धि होती है। अतः पूर्ण हिंसा-त्यागी मुनि इनका वर्जन करता है।

(c) पंचासव.....उज्जुदंसिणो। गाथा को पूर्ण कर उसका भावार्थ लिखिए।

उ. पंचासव-परिण्णाया, तिगुत्ता छसु संजया। पंचनिग्गहणा धीरा, निग्गंथा उज्जदंसिणो।।
भावार्थ-निर्ग्रंथ पाँच आश्रवों के त्यागी, तीन गुप्तियों से गुप्त, षट्काय जीवों की यतना करने वाले, पाँच इन्द्रियों को वश में रखने वाले, धीर और ऋजुदर्शी होते हैं।

(d) कर्म बंध के निमित्त लिखते हुए प्रदेश बंध का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उ. प्रकृति बंध और प्रदेश बंध योग के निमित्त से होते हैं। जबकि स्थिति और अनुभाग बंध कषाय के निमित्त से होते हैं।
प्रदेश बंध- जीव के साथ सम्बद्ध कार्मण वर्गणा के स्कन्धों का न्यूनाधिक प्रदेश वाला होना प्रदेश बंध कहलाता है।

(e) निम्न शब्दों के अर्थ लिखिए-

उ. 1. ओवणिहिए- नजदीक के घरों से भिक्षा लेना।
2. अपव्रीडक- लज्जावश दोषों को छिपाने वाले शिष्य की लज्जा दूर कराने वाला।
3. सद्दाउलगं- दूसरों को सुनाने के लिये जोर-जोर से बोलकर आलोचना करे।
निम्न गाथाओं को पूर्ण कर भावार्थ भी लिखिए।

(f) मत्तद्विपेन्द्र.....मतिमानधीते।।

उ. मत्तद्विपेन्द्र- मृगराज- दवानलाहि- संग्राम- वारिधि- महोदर- बंधनोत्थम्।
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव, यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते।।
भावार्थ- जो पुरुष आपके इस स्तोत्र का निरन्तर पाठ करता है, उस पुरुष के उक्त आठ एवं इनके समान सभी प्रकार के अन्य भय स्वतः ही नष्ट हो जाते हैं।

(g) रक्तेक्षणं.....पुंसः।।

उ. रक्तेक्षणं समदकोकिल- कंठनीलं, क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम्।
आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तश्संक- स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः।।
भावार्थ- आपके नामरूपी नागदमनी जड़ी होने से भयानक सर्प भी कुछ नहीं करता। अर्थात् भक्तजन साँपों से निर्भय रहते हैं।

(h) इत्थं.....विकाशिनोऽपि।।

उ. इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र ! धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य।
यादृक्प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा, तादृक्कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि।।
भावार्थ- जैसे प्रकाशमान तारागण सूर्य के समान प्रकाशित नहीं हो सकते, वैसे ही हरिहरादि देव आपकी समवसरण जैसी विभूति को धारण नहीं कर सकते।